!

मृत्यु
मृत्यु की घाटी और
सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण

- साजु

Mrityu
Mrityu Ki Ghati
Sarvashaktiman Parameshwar Ki Sharan

By Saju

First published : February, 2000
Second Print : March, 2005
Published by : Margam Books
P. Box No. 27
Bilaspur
C'Garh - 495 001
Ph : +9425549016
Printed by : Graphic Systems & Co.
Mallappally, Ph : 0469 - 2782260

For Private Circulation only

आमुख

इस छोटी पुस्तिका के लिए एक परिचय आवश्यक है। इस पुस्तिका का विषय- वस्तु मेरे जीवन का एक अनुभव है.....; छोटा, किन्तु एक कठिन अनुभव।

इस पुस्तक के शीर्षक में ही मेरा अनुभव समाहित है।

एक मृत्यु : यह मेरे एकलौते बड़े भाई की आकस्मिक मृत्यु का वर्णन है। मृत्यु से संबांधित मेरे विचारों का प्रारंभ इसी घटना से हुआ है।

मृत्यु की घाटी : उत्तर भारतीय गांवों के निरंतर दौरों और वहां के खानपान एवं जलवायु के कारण मैं बीमार हो गया था। हेपेटैटिस बी के वायरस के कारण मेरा लिवर खराब हो चुका था। भाई के शवसंस्कार के पश्चात् घर की ओर लौटते हुए मैं मृत्यु की घाटी में से होकर यात्रा कर रहा था तथा डॉक्टरों ने मुझे इस विषय में सावधान भी कर दिया था।

सर्वशक्तिमान की शरण : मेरी मानसिक स्थिति क्या थी जब डॉक्टरों ने मुझसे कहा कि मैं मृत्यु के बेहद करीब पहुंच चुका हूँ? मृत्यु का सामना करते समय मेरे मन में क्या बवंडर चल रहा था? इस पुस्तिका के मुख्य भाग में यही विवरण समाहित है। मैंने स्वयं को सर्वशक्तिमान की शरण में छोड़ दिया क्योंकि मुझे मालूम था कि जीवन और मृत्यु परमेश्वर के हाथों में हैं। मैंने इस बहुमल्य सच्चाई को जान लिया था कि यदि परमेश्वर का सानिध्य उपलब्ध हो तो फिर जीवन और मृत्यु एक समान हैं।

इस पुस्तिका में एक प्रकार के रहस्यवादी अनुभव का वर्णन किया गया है जिसमें परमेश्वर हमारे जीवन का एकमात्र याथार्थ्य बन जाता है।

मॅरी हार्दिक आभिलाषा और प्रार्थना है कि मॅरे पाठकगण मॅरे अनुभव सॅ परॅ जाकर जीवन और मरण की वास्तविकता को जान जाएंगॅ।

प्रेम पूर्वक,

साजु

1

नवंबर 20, 1997 ।

केरल एक्सप्रेस नई दिल्ली से चलकर मध्य केरल के कोट्टयम स्टेशन पर पहुँची। मेरी मामी सास इटारसी से ही मेरे साथ सफर कर रही थीं। प्लेटफार्म पर उतरने पर मैने आश्चर्य के साथ देखा कि वहां मेरे मामा ससुर के अलावा और भी कई सगे संबंधी आए हुए हैं। मेरे दिल ने प्रश्न किया...। ये सब लोग किसे लेने आए हैं? मामी को लेने तो नही होगा। फिर किसे ? मैं माह में कम से कम एक लंबी यात्रा जरूर करता हूँ। लेकिन मुझे विदा करने या लेने कोई नहीं आता है।

''क्या हुआ सनी, इतने सारे लोग...? क्या बात है....?''

सनी शांत ही रहा।

''तुम कहाँ उतर रहे हो, साजु?'' मेरे एक रिश्तेदार जोस भैया ने प्रश्न किया।

''तिरुवल्ला में....! क्यों ?'' उनका प्रश्न मुझे अस्वाभाविक सा लगा।

''मैं भी तुम्हारे साथ तिरुवल्ला चल रहा हूँ।'' उन्होने कहा।

इतनी कम दूरी के लिए सुपर फास्ट ट्रेन...? कोट्टयम से तिरुवल्ला के बीच की दूरी आधे घंटे की ही थी....। यह क्या पागलपन है! मैंने मन में सोचा।

ट्रेन फिर से गति पकड़ने लगी। मैं पुनः ट्रेन में सवार हो गया। मेरे साथ जोस भैया भी...। ''साजु, ईश्वर की सेवा कैसी चल रही है?'' भैया के स्वर में गंभीरता थी।

''साजु, सेवकाई के क्षेत्र में जब हमें आनंद और सफलता मिलती है तब निजी जीवन में हमें कुछ दुख की अपेक्षा भी करनी चाहिए।'' भैया ने कहा।

काफी समय से मुझे दाल में कुछ काला नजर आ रहा था।

''भैया, क्या बात है....? आखिर कुछ तो बताईये....?'' मैं धैर्य खोने लगा था।

''साजु, ईश्वर ने राजू भैया को अपने पास बुला लिया है।'' अंततः उन्होनें रहस्य पर से पर्दा उठाया।

मेरे शब्द गले में ही अटक गये। मैं क्या कहता ? मेरी दृष्टि शून्य पर टिक गई।

राजू भैया मेरे बड़े भाई थे। मैनें अपना एकलौता भाई खो दिया था। 1990 में उनके हृदय का आपरेशन हुआ था। उनकी मृत्यु की खबर की तुलना में वे दिन अधिक-विह्वल और व्याकुल करने वाले थे। मेरे साथ प्रायः ऐसा ही होता है। मृत्यु से अधिक किसी की बीमारी मुझे व्याकुल करती है। एक ऐसा विचार मन में आता है कि मृत्यु के बाद तो हम कुछ भी नही कर सकते। जो होना था..... जो परमेश्वर नें चाहा..... वह हो चुका है। अब उसे स्वीकार कर शांत रहना है। परमेश्वर

में शरण लेना है। राजा दाउद ने अपने पुत्र के बीमार होने पर पश्चाताप व उपवास किया। किन्तु उसके मरणोपरांत उसने उठकर भोजन किया।

आपरेशन के पश्चात् वे सात वर्ष जीवित रहे। इसी दौरान प्रभु यीशु के साथ उन्होने एक सजीव संबंध कायम कर लिया था। अर्थात् उन्होने पाप के बंधन से मुक्ति का अनुभव कर लिया था। अब हृदयाघात से उनकी मृत्यु हो चुकी है। किन्तु एक आशा के साथ.....। एक ऐसी आशा कि वे अपना अगला अंतहीन जीवन परमेश्वर के साथ व्यतीत करेंगे।

मेरी यादों मे भैया कहाँ है ? मेरे पास उनकी बहुत अच्छी यादें नही है। मेरे बचपन की यादों में मेरे दोनों भाई बहन नहीं हैं क्योंकि वे दोनों मुझसे दस-बारह वर्ष बडे थे। जब मैं तीन वर्ष का था तब मेरी बहन और मेरे पांचवें वर्ष में मेरा भाई हॉस्टल की जिंदगी अपना चुके थे। फिर तो मैं जीवन की यात्रा में अकेला पथिक रह गया। इसके अलावा मांसपेशियों के दर्द ने मुझे जकड़ लिया था। मेरी जिंदगी घर और स्कूल की कक्षाओं के मध्य सिमटकर रह गई थी। खेल का मैदान मुझसे छूट गया। मुझे अक्षर मात्र को साथी के रूप में पाकर संतुष्ट रहना पड़ा। सारांश में यदि कहूँ तो मेरे बचपन के सोच-विचारों को आकार देने में मेरे भाई-बहनों के अभाव ने ही मुख्य भूमिका निभाई, न कि उनके साथ ने। मैंने उन्हें दूर रहकर ही जाना। फिर भी मुझे उनसे प्यार था। इसका एक अहम् कारण यह रहा हो कि उन्हें लेकर मुझे गर्व ही होता था।

मैंने शून्य से अपनी दृष्टि हटाई। मेरी आंखों से एक बूँद आंसू टपका। ''मुझे इससे भी अधिक दुख होता यदि आठ वर्ष पूर्व उनकी मृत्यु हो जाती। अब तो उन्होंने एक आशापूर्ण मृत्यु पाई है.....।'' बिना चेहरा उठाए ही मैने कहा।

ट्रेन से उतरकर घर तक की यात्रा में मैने भैया के विषय में और जानकारी एकत्रित की। मेरे भैया विदेश में नौकरी करते थे। घटना कल की थी। अपने फ्लैट में वे अकेले ही रहते थे। सुबह ड्राइवर उन्हे दफ्तर ले जाने आया था। उस ने देखा कि घर के सारे दरवाजे बंद थे। घंटी

बजाने पर भी कोई उत्तर नही मिला। फोन का भी जवाब नहीं मिला। अंततः स्थानीय पुलिस नें आकर घर खोला। यात्रा के लिए तैयार वेष में बिस्तर पर अधलेटे अवस्था में...। वे अपने अनंत निवास की यात्रा पर निकल चुके थे।

तुरंत ही मुझे अपने भतीजे बॉबी की याद हो आई। वह कक्षा दसवीं का छात्र है। उसी की उम्र में मैंने भी अपने पिता को खो दिया था। उन दिनों साईकिल से गिरने के कारण मेरा हाथ टूटा हुआ था। भैया विदेश में नौकरी पर थे। उस समय कई महत्वपूर्ण निर्णय मुझे अकेले ही लेने पड़े थे।

अपने कई प्रियों की मृत्यु को मैंने देखा है। मात्र १४ वर्ष की उम्र में अपने पिता की मृत्यु.....। मृत्यु शैय्या में लेटे हुए उन्होंने मुझसे आग्रह किया -- ''बेटा, तुम मेरे लिए प्रार्थना करो।'' उन्होने पहले कभी ऐसा नही कहा था। मैंने कभी भी उन्हें प्रार्थना करते हुए नहीं देखा था। फिर भी....।

प्रार्थना समाप्त होने से पहले ही वे इस संसार से कूच कर गये। उनके बाद दादा....., दादी.....। एक एक कर सब चले गये। मैं सबकी मृत्यु का मूक गवाह बनता रहा। जब एक सड़क दुर्घटना में चाचा-चाची की मृत्यु हुई तब भी दायित्व निर्वहन के लिए मैं बैंगलोर पहुँचा।

मृत्यु की खबर पाकर भी बॉबी रोया नही था। लेकिन मुझे देखते ही उसकी रूलाई फूट पड़ी। रोने और ना रोने, दोनों का कारण दुःख की तीव्रता हो सकती है। मुझे एक कविता याद आती है -- रण भूमि में वीरगति प्राप्त एक जवान की लाश घर लाई गई। काफी प्रयास के बाद भी उसकी युवा पत्नी की आंखों से आंसू नहीं निकले। किसी ने कहा -- ''यदि यह नही रोई तो मर जाएगी।'' लोग उस जवान की वीरता की कहानी उसे सुनाने लगे। हर संभव प्रयास करने के बाद भी वह नही रोई। उस कविता की अंतिम पक्तियाँ इस प्रकार हैं --

"Rose a nurse of ninety year
Set her child upon her knee
Like summer temptest came her tear
Sweet my child, I live for thee''

पति के शव का दर्शन या उनके साहसिक कारनामों का वर्णन उसे नहीं रुला सकीं पर अपनी अबोध बच्ची को देखकर वह रो पड़ी। आजकल मुझे भी किसी की लाश को देखकर नहीं पर उसके परिजनों का रोना देख कर रोना आता है। इसके बावजूद मृत्यु की सच्चाई और उस के सम्मुख मनुष्य की असहाय दशा को याद कर मैं अपने आँसू पोंछ लेता हूँ। स्पष्ट कहूँ तो मुत्यु की खबर मुझमें बड़ा आघात नहीं कर पाती। या तो मैं इस विषय में गंभीर नहीं हूँ या फिर उनके प्रति मेरे प्रेम में उतनी गहराई नही है जितना होना चाहिए। क्या अपनी पत्नी और बच्चों की मृत्यु पर भी मेरी प्रतिक्रिया यही होगी ? शायद नहीं। फिर भी शायद मैं बहुत अधिक टूट नही जाऊंगा।

कभी-कभी मैं अपनी पत्नी से कहता भी हूँ -- शायद मुझे किसी से भी गहरा प्यार नही है, तुमसे भी नहीं।'' तब वह मुझे सांत्वना देते हुए कहती -- ''ऐसा कुछ नही है।'' इन सब विचारों के मध्य मैने स्वयं से पूछा, ''यदि मैं मृत्यु के निकट पहुँच जाऊँ तो मेरी प्रतिक्रिया क्या होगी?'' मैं बिस्तर पर लेटे लेटे ही विचार करने लगा। यदि मेरी मृत्यु समीप हो तो क्या मैं इसे सहजता के साथ लूँगा ?

2

कल सुबह भैया का कफन विदेश से आने वाला है। आज रात को उसे लेने एयरपोर्ट जाना है किन्तु मुझे तेज बुखार और उल्टी होने लगी। शव लेकर वापस घर की यात्रा में भी बुखार में जरा भी कमी नही आयी थी। दिन के 11 बजे हम घर पहुँचे। मेरे एक चिकित्सक रिश्तेदार ने मुझसे हाथ मिलाते हुए चौंककर कहा, ''अरे तुम्हें तो बुखार है। कम से कम 104 डिग्री तो होगा ही।'' उन्होने मुझे दवाई दी। मुझे पैरों में लड़खड़ाहट का अनुभव होने लगा। कुछ देर विश्राम करने के बाद पुनः उठ गया। इस दौरान मेरी कलीसिया के पास्टर जेम्स अब्राहम लगातार मेरे साथ रहे।

शव के दफन तक किसी तरह मैं संयम रखे रहा। लोग मुझे सहानुभूति पूर्वक देख रहे थे। उन्होंने सोचा कि भाई की मृत्यु ने मुझे तोड़ दिया है किन्तु असलियत मुझे ही मालूम थी कि मन से अधिक मेरा तन टूटन का अनुभव कर रहा था। घर पहुँचकर मैं सीधे अपने

कमरे में जाकर बिस्तर पर पसर गया। सबने सोचा कि मुझे सोने दिया जाए परन्तु मैं तो नीम बेहोशी में था।

अगले दिन सुबह जब मैं उठा तो मेरा बुखार 105 डिग्री पर था। क्लीनिक में जांच के उपरांत पता चला कि न तो मुझे मलेरिया है और न ही पीलिया, परंतु ज्वर अब भी ज्यों का त्यों बना हुआ था। डाक्टरों ने मेरी बिगड़ती हालत को देखकर मुझे मेड़िकल कालेज में भेजने की सलाह दी।

लिवर एन्जाइम गणना बढ़ती ही जा रही थी। 1000.... 2000.... बहुत तेजी से उसकी गणना बढ़ती जा रही थी। चिकित्सकों ने इतना तो तय कर लिया था कि लिवर से संबंधित ही कोई रोग है फिर भी मर्ज किसी के काबू में नही आ रहा था।

मेरी पत्नी डाक्टर से मिलने गई थी। लौटी तो उसका चेहरा सफेद हो रहा था। ''डाक्टर ने क्या कहा ?'' मैंने पूछा। उसने प्रतिप्रश्न किया, ''मरने से डर तो नही लगेगा न....?''

''साफ-साफ बताओ...।'' मैं थोड़ा नाराज हुआ।

"*Prepare for anything....* किसी भी बात के लिए तैयार रहो!'' कहकर वह फफक पड़ी। मैं उसे सिसकता हुआ देख रहा था।

अगली सुबह हम किसी और अस्पताल के लिए चल पड़े। मैं कार की पिछली सीट पर अधलेटा, विचारों में खो गया। मैं सोचने लगा....शायद मैं मर जाऊँ। कल ही डाक्टर ने ऐसी संभावना जताई थी लेकिन अब तक मैं इस पर गंभीरता से सोच भी नहीं पाया था....। प्रार्थना करने की बात तो बहुत दूर थी....। अस्पताल पहुँचने में एक घंटा और लगेगा....। चाहूँ तो मैं यह समय प्रार्थना में व्यतीत कर सकता हूँ।

पर मैं क्या प्रार्थना करूँ? यही कि मैं न मरूँ? लेकिन जीवन और मृत्यु तो परमेश्वर के हाथों में है? फिर भी मैं ईश्वर से अपनी इच्छा तो कह ही सकता हूँ। अब तक की मेरी जिन्दगी उतनी बुरी नही थी। मेरे लिए यीशु के संग चलना एक अनिर्वचनीय अनुभव था। अक्सर रात्रि

के पहर का वह फलरहित परिश्रम....। पुनः उसकी आज्ञानुसार जाल डालना....। आश्चर्यजनक....। इतनी मछलियाँ कि नाव भी डूबने लगती....। कभी - कभी मसीह के दिव्यज्ञान से हृदय आलोकित होता....। फिर उसकी प्रशंसा भरी मुस्कान....। कभी-कभी तो संभावित क्रूस मृत्यु का भय....। पराजय के भाव। पुनः जाल फेंकना। तैयार किये हुए भोजन के साथ इंतजार करते प्रभु की आंखों में वह प्यार की उष्णता....। फिर हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर देने वाला उसका वह प्रश्न। क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम करता है? चरवाही की नियुक्ति। पराजय की दशा में भी मैं उससे वार्तालाप कर सकता था....। जिंदगी मेरे लिए कभी एक भार नही रहीं। क्या मैं यीशु से कहूं कि मुझे और जीना है।

जीना बुरा नहीं है। परमेश्वर का सहकर्मी होना इतनी छोटी बात नहीं हो सकती। पराजय के समय भी मैंने उसके प्यार की गर्मी को महसूस किया है। आज यदि मैं उसके दाख की बारी में नही होता तो कहाँ होता? नहीं मालूम, ...ऐसा कभी सोचा नहीं,... कभी ऐसी कोई कल्पना ही नहीं की है।

इस जिंदगी में कितने ही मित्र मिले। हर मित्रता का आधार क्रूस ही रहा। मेरे मित्र सच्चे अर्थों में मित्रता को निभाने वाले थे। मेरे प्यार का कई गुना उन्होने वापस किया। ऐसी सच्ची मित्रता ने जिंदगी को बेहद खूबसूरत बना दिया था। क्या मैं यह प्रार्थना करूँ कि मुझे और जीना है?

मृत्यु भी उतनी बुरी नहीं हो सकती। इसी जिंदगी में यीशु की निकटता ने जिंदगी को रंगीन बना दिया था। मृत्यु तो हमें ईश्वर की अत्यन्त निकटता में ले जाती है। पौलुस भी तो यही चाहता था। उसके अनुसार तो ये अति उत्तम था। हो सकता है उसे जो स्वर्गीय दर्शन मिला था, उसके बल पर वह यह कह सका। दूसरी तरफ पृथ्वी पर का जीवन भी उसके लिए आसान था। वह भी तब जब वह रोमी शासन के कारागार में बंद है। फिलिप्पी शहर के लोगों से वह कहता है, ''चाहे मैं मरूँ या जिऊं, ईश्वर का नाम मेरे द्वारा महिमा पायेगा।'' मैं मर जाऊँगा या बच जाऊँगा....? मुझे नहीं मालूम। दोनों के लिए मैं तैयार हूँ।

मैं किस बात के लिए प्रार्थना करूँ। मृत्यु के लिए या जीवन के लिए? मैं विचारों के सागर में गोता लगाता रहा। इस बीच मैं किसी भी बात के लिए प्रार्थना नहीं कर पाया।

3

इस समय हमारी कार 115 कि.मी. प्रति घंटे की तीव्र गति से दौड रही थी। हम अस्पताल के निकट पहुँचने वाले थे। अस्पताल के द्वार पर मेरे कई बंधुगण इंतजार में थे। कार से उतरने से पहले ही मुझे व्हील चेयर मुहइया की गई।

''भर्ती करना है....?''

''सारी कार्यवाही हो चुकी है।''

''पैसा....?''

''सब दिया जा चुका है।''

मुझे रात की बातें याद आयी।

किसी ने पूछा था, ''इतना पैसा कहाँ से आयेगा?'' मैं ने कोई जवाब नही दिया था। मैं कहता भी क्या.....? परमेश्वर का प्रबंध वे खुद ही देख लें, मैं ने सोचा। यह अस्पताल भी तो इतना मंहगा था कि

यदि मरीज यहाँ आकर बच भी जाय तो बिल देखकर जरूर उसकी जान निकल जाती....।।

पिछले अस्पताल से हमें रात को डिस्चार्ज किया गया था। अगले भोर को ही हम इस अस्पताल में आ पहुँचे थे। पैसों का कोई प्रबंध मैं नही करवा पाया था। किंतु यहाँ तो एडमिशन फीस और अग्रिम भुगतान भी हो चुका है।

थोडी देर बाद मेरे एक मित्र ने आकर कहा, ''साजु, मैंनें तुम्हें देने के लिए कुछ रुपया अलग कर रखा था। क्या मैं अभी दे दूँ....।''

मैनें कोई उत्तर नही दिया। यह भी नहीं पूछा कि रुपया कितना है। मेरी पत्नी जेस्सी के हाथों में उसने जो रकम दी वह पैंतीस हजार रुपये से एक भी पैसा कम नहीं था।

थोड़े ही समय में उस के हाथों में कुल पचहत्तर हजार रुपये थे।

यह क्या.....? आज सुबह तक तो यह समस्या थी कि यहाँ का एडमिशन फीस किस प्रकार चुकाया जायेगा। लेकिन अब तो रुपयों से मेरा बैग भर गया है। अब इतना सारा रकम लेकर मैं इस अस्पताल में कैसे घूमूंगी? जेसी ने नारी सुलभ अदा दिखाई। उसके चेहरे पर परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के भाव थे।

मेरी बहन मेरे निकट ही खड़ी थी। सब कुछ देख कर वह कहने लगी। 'हमारे पास अकूत संपत्ति है....। फिर भी एकदम से इतना रकम जुटाना....। हमारे लिए तो यह बहुत कठिन है।''

वह अक्सर मुझ पर नाराज होती थी कि मेरे पास संपत्ति नहीं है और मैं संपत्ति के लिए परिश्रम भी नहीं करता। वह हमेशा कहा करती....। ''देखना, अचानक कोई जरूरत आ गई तो मदद के लिए कोई नहीं होगा।'' अंततः परमेश्वर पर शरण लेने का परिणाम उन्होने जान लिया।

यहाँ आने के बाद का पहला जाँच रिपोर्ट आया। लिवर एनजाइम गणना-4075। कल से दुगना। स्वाभाविक गणना 70 होती है। डॉक्टर ने कई जाँच के बाद घोषणा की ''आपको हेपेटइटिस वैरस अटैक हुआ

है। ''चूंकि यह थोड़ा गंभीर मामला है, अगले एक दो हफ्ते गणना इसी प्रकार बढ़ती जायेगी। इसका कोई इलाज नहीं है। हॉ, कुछ दवाइयाँ यूँ ही खाते रह सकते हैं, बस....।

दिन गुजरने के साथ ही मेरा मर्ज भी बढ़ता गया। पूरी देह पीतवर्ण होने लगी थी। उल्टी भी पीले रंग की होने लगी। पेशाब का रंग लाल हो गया था। बिस्तर से उठने में मैं लाचार हो गया। मुझे लगता कि मैं गिर जाऊंगा। कोई भी मेरे प्रति आशावान नजर नहीं आता था। ऐसा लगता मानों सब मुझे मृत्यु के बेहद नजदीक मान रहे हों। मुझे भी लगा कि अब मुझे भी प्रार्थना करनी चाहिए। जीने के लिए या मरने के लिए? फिर भी कुछ स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। लगा कि प्राथमिकता जीने को है। मुझे मृत्यु से डर नही लग रहा था लेकिन मरने की इच्छा भी नहीं थी।

''चाहे मैं मृत्यु की घाटी में से होकर चलूँ तो भी हानि से नही डरूंगा।'' परमेश्वर का वचन मेरे कानों में पहुँचा। कहीं इसका अर्थ यह तो नहीं कि मैं इस मृत्यु की घाटी को सकुशल पार कर जाऊंगा। किन्तु इस वचन का दूसरा भाग मुझे ज्यादा अच्छा लगा। हानि से न डरूंगा। क्या हानि में मृत्यु भी शामिल है? कुछ भी हो, सच्चाई यह है कि हानि नही होगी। मर जाऊंगा फिर भी हानि नही होगी। पता नही क्यों? अब मुझे मृत्यु एक हानि के सामान नही लग रहा था। यद्यपि मृत्यु मेरे इतने निकट आ चुकी थी।

मृत्यु की घाटी में मेरे लिए शांति की बात यह नहीं कि मैं मरूंगा नहीं पर यह है कि तू सदा मेरे साथ रहता है..... चाहे मैं मरूँ या जियूँ।

सच है। वो मेरे साथ ही है। मैंने आँखों को बंदकर लिया। वह मेरे पास ही था। मैं शांत रहा। मैं उसकी उपस्थिति महसूस करता रहा। मैंने उससे बहुत कुछ कहा। उसने भी बहुत कुछ कहा। लेकिन मुत्यु के विषय में उसने कुछ नहीं कहा। शायद इसलिए कि मैंने पूछा नहीं या फिर

इसलिए कि अभी यह विषय प्रासंगिक नहीं था।

मेरी बीमारी की खबर बहुत जल्दी मेरे मित्रों को मिल गई थी। भारत के विभिन्न भागों में, मध्यपूर्व के देशों में, यूरोप में, कनाडा में, आस्ट्रेलिया में। हां, वे मुझे प्यार करते हैं। मेरे मित्रों को मेरी चिंता है। मेरे मित्र मेरी चंगाई के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। इतना सब जानकर मैं झेंप सा गया। क्योंकि दुनिया भर में लोग मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं और मैं अभी भी स्पष्ट नहीं हो पा रहा था कि क्या प्रार्थना करूँ।

इतवार को सैकड़ों सभाओं में विश्वासियों ने मेरे लिए प्रार्थनाएं की । उस शाम की मॅरी एक परिचित मुझसॅे मिलनॅे आए । ''एनजाइम गणना कितनी है।'' मैं नॅे उन्हें बताया कि दो दिन से कोई जांच नही हुई है और डॉक्टर के अनुसार वह निरंतर बढ़ती ही जा रही है।

उन्होनॅे कहा, ''साजू, तुम जांच करने के लिए कहो। इतने सारे लोग तुम्हारे लिए प्रार्थनायें कर रहे हैं। निश्चय ही अब कम हो गया होगा।''

अगले दिन डॉक्टर के आने पर मैंने पूछा। ''.... गणना नहीं करनी है?'' डॉक्टर का कहना था कि इसकी आवश्यकता नहीं है। वह अब तक बहुत बढ़ गया होगा। कम से कम 10 दिन तक ऐसा ही होता रहेगा।

''फिर भी जांच कर लेते हैं।'' मैं ने कहा।

''इसकी जरूरत है क्या? बेकार में उतना खून बरबाद होगा।'' डॉ. नॅे मजाक किया।

किन्तु मेरी जिद के कारण खून जांच के लिए दिया गया। शाम को नर्स जांच परिणाम लेकर आई। एक आश्चर्यजनक बात हुई है।'' उन्होने कहा। ''आपका लिवर एन्जाइम संख्या कम हो रहा है। उम्मीद तो 10,000 से उपर की थी किन्तु वह 1000 से नीचे पहुँच चुका था। यह परमेश्वर ने किया

था। मेरे मित्रों की प्रार्थना का उसने आदर किया। परमेश्वर की स्तुति हो।

4

लिवर एनजाइम की संख्या के कम होने के बावजूद बिल रूबिन (पीलिया से संबंधित गणना) बढ़ती ही रही। बिल रूबिन की संख्या 14 तक पहुँच चुकी थी। पूरी देह पीत वर्ण हो चुकी थी। मेरे पास एक पीले रंग की टी शर्ट थी। जब मेरी पत्नी मुझे वह टी शर्ट पहनने को दी तो मैं ने कहा कि इसे पहनना न पहनना बराबर ही है।

मैं बेहद कमजोर हो गया था। मेरी सेहत बहुत गिर गयी थी। यहाँ तक कि खड़े होने पर गिर - गिर पड़ता। फिर भी मैं बाथरूम तक जाकर नहा आता। टिपटाप होकर लेटने का प्रयास करता।

मुझे हर कहीं पीलापन दिखता। मैं चाहकर भी कुछ पढ़ नही पाता। बिल रूबिन की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। डॉक्टर ने बिस्तर छोड़ने को मना कर दिया। लिवर बहुत कमजोर हो गया था। अब विश्राम करना बहुत आवश्यक हो गया था। मुझे हिजिकिजाह नबी की घटना याद हो आई। एक बार उसे बहुत कठिन बीमारी हुई थी। (यशा 38:1)। किन्तु

डॉक्टर के बिना ही वह चंगा हो गया था। निश्चय ही लिवर एनजाइम की संख्या में कमी आश्चर्यजनक है किन्तु यकृत के पुनः निर्माण में आराम की सख्त आवश्यकता है।

मुझे भी आराम करना अच्छा लगता है। फिर भी मैंने स्नान करना नहीं छोड़ा और तैयार होना भी। अपने मित्र बिनी जेकब से मैंने कहा, ''मुझे एक वाकमेन चाहिए।'' एक और भाई के द्वारा मैंने बाईबल के कैसेट भी मंगवा लिए। ईश्वर के वचनों को सुनते हुए मैं आराम करने लगा।

अपने एकांत में मैं अपनी और बाईबल की दुनिया में रहता। दो सफ्ताह पूर्व मैं मुत्यु के हाथों में था। फिर मुत्यु की घाटी और अब मुझे लगा कि मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता की गोद में हूँ।

हाँ, यह बहुत अच्छा अनुभव है। मैंने हर प्रकार के कोलाहल के प्रति अपने कानों को बंद कर दिया....। यहाँ तक कि पंखे की आवाज भी मुझसे दूर हो गई। परमेश्वर की निकटता को मैंने महसूस किया। उसकी छाती में अपने सिर को छुपाए हुए मैने कहा--

''तू मेरा शरण--स्थान है।

तू मेरा गढ़ है। और

तू ही मेरा परमेश्वर है।''

मैंने अपने आप को उसके पंखो में छुपा लिया। अब मुझे शत्रु का भय न रहा।

प्रभु, तू मेरा शरण स्थान है। तुझे त्याग कर मुझे कहीं नही जाना। तू ही मेरा निवास स्थान है और मैं तेरा निवास स्थान।

एक अनोखा रहस्यामय अनुभव। रहस्यवादियों को मैंने हमेशा आदर के साथ ही देखा है। रहस्यवादी होना इतना आसान नही है। अर्थात् कोई जानबूझ कर इस अवस्था में नहीं पहुँच सकता। एक सुबह उठकर कोई यह कहे कि आज से मैं एक रहस्यवादी हूँ, यह असंभव है।

एक रहस्यवादी अपने चहुं ओर की चीजों को नहीं देखता है.....।

उन्हे सुनता या महसूस नहीं करता है। अर्थात् कोई भी चीज उसके लिए बाधक नही है। वह सर्वोच्च प्रभु की शरण में हैं। ईश्वरीय सानिध्य ही उसके जीवन का यथार्थ्य होता है। अतः वह इसी के द्वारा संसार को पहचानता है।

मुझे बोन होफर का Cost of Discipleship का ध्यान हो आया। जब एक व्यक्ति यीशु की शिष्यता स्वीकार करता है तब वह यीशु में होकर संसार को पहचानता है।

एक शिष्य के जीवन का यथार्थ्य यीशु है। इसीलिए तो वह माता -- पिता, पत्नी -- बच्चों से बढकर यीशु को चाहता है।

एक रहस्यवादी होना अच्छा है। क्या मेरा यह अनुभव एक रहस्यवादी का है। सारे तर्कों से परे क्या उसकी निकटता ने मुझे अस्तित्वहीन कर दिया है।

उसकी निकटता का अनुभव मुझे आनंदित कर रहा था फिर भी उसके सानिध्य में लीन होकर स्वअस्तित्वहीन होने के अनुभव में पहुँचना शेष या। कुछ समय के लिए मुझे लगा कि मैं भी एक रहस्यवादी बन गया हूँ। फिर अपनी सोच पर मुझे संदेह भी हुआ। मैं स्वयं को सांत्वना देने लगा। शायद यह मेरी कामना हो।

बीमारी के बिस्तर पर परमेश्वर की निकटता की गहनता ने मुझे अपने अधीन कर लिया। अपनी देह का पीलापन भूल गया। उलटी होना भूल गया। दवाइयाँ भूल गया। मृत्यु को भूल गया। अपने मित्रों को मैं भूल न पाया। अपने प्रेमी मित्रों के लौट जाने पर मैं पुनः परमेश्वर के सानिध्य की गर्मी में पहुँच जाता। उसके पंखो तले विश्राम पाता।

हे परमेश्वर। सेनाओं के यहोवा, तेरा निवास क्या ही प्रिय हैं!!

''उसके वास स्थान में गौरैयों ने डेरा कर लिया है। जहाँ मनुष्य भय ग्रस्त हो रहे थे वहीं शूपाबेनी ने अपना घोंसला बना लिया।''

बिस्तर पर पड़ा हुआ अपनी निर्बलता में मैंने उसकी सामर्थ का अनुभव किया। मानों मैं उसकी आशीषों की वर्षा में भीगने लगा। धीरे-

धीरे उसकी सामर्थ मुझे पर छाने लगी।

एक दिन एक भाई परामर्श लेकर आया। उसने एक बड़ी ही सुंदर कहानी सुनाई। किसी तीन वर्ष की बालिका को उसका पिता पियानो बजाना सिखा रहे थे। काफी रात गये तक बच्ची पियानो सीखने के लिए मजबूर हुई। उसकी नन्ही और कोमल उंगलियाँ दर्द करने लगी। वह रोने लगी। पिता ने शांति पूर्वक कहा -- ''बेटी मुझे मालूम है कि तुम्हारी उंगलियाँ दर्द कर रही हैं। लेकिन मैं तुम्हें एक महान पियानोवादक बनाना चाहता हूँ। इस दर्द के बावजूद तुम्हारा परिश्रम बहुत आवश्यक है।''

''हम भी ऐसे ही हैं,'' उसने कहा। ''कई बार हम कहते हैं कि हे परमेश्वर, मेरे साथ ऐसा क्यों ? केवल मैं ही क्यों ? उत्तर एक ही है। परमेश्वर हमारे प्रति कुछ अभिलाषा रखता है।'' मुझे कहानी पसंद आई। उसका संदेश भी.....।

मैंने मन में कहा, ''भाई, तुम एक अच्छे परामर्श दाता बन चुके हो। यह बहुत अच्छी बात है लेकिन अंत का जो प्रश्न है, केवल मैं ही क्यों? वह अब तक मेरे जेहन में नहीं आया है।''

एक दिन सुबह डॉक्टर ने आकर कहा, ''लिवर एनजाइम की गणना करने से हम डर रहे थे। लेकिन अब तो वह बहुत ही कम हो चुका है। अब आप चाहें तो घर जा सकते हैं।'' इस अस्पताल में मुझे दो हफ्ते हो रहे थे।

5

डिस्चार्ज का समय आने पर मेरे मन में बेचैनी होने लगी। बिल कितना होगा ? अब तक 10 हजार रुपये ही दिया गया था। अचानक बहुत बड़ा बिल आ गया तो.....।

पहले दिन जो धन इकट्ठा हुआ था उसमें से एक हिस्सा दमोह के मिशन केन्द्र में भेज दिया गया था। बाकी रुपये एक भाई के हाथ में था। लेकिन वह काफी है क्या? भाई सनी ने कहा था कि बिल मिलने के बाद फोन करना। कहीं न कहीं से बंदोबस्त करेंगे। फिर भी बिल के विषय में उत्सुकता बनी रही। बिल के बारे में पूछने पर इंतजार करने को कहा गया। अब तक हिसाब नही हुआ था। इस अस्पताल में एक दो लाख रुपये तो साधारण बिल था। इसी बीमारी से ग्रस्त किसी व्यक्ति का 2.5 लाख का बिल आया था। किन्तु उसे कई महीने अस्पताल में रहना पड़ा था। परन्तु मेरा बिल उतना नहीं होगा....। मेरी तो अद्‌भुत चंगाई है। इसके अलावा मुझे भर्ती हुए दो हफ्ते भी नही हुए हैं। इन सब के बावजूद बिल के विषय में अनिश्चितता

बनी रही। मेरी पत्नी के पास बैग में 5000 रू. थे। उसने भाई जेम्स से वह पैसा मंगवाया जो उसने मेरे एक मित्र के घर में रखवा दी थी। यह सोचकर कि भाई सन्नी यदि 1.5 लाख रुपये भी लेकर आये तब भी 5000 रू. की कमी ना हो। जेम्स के जाने के कुछ देर बाद वह पुनः काउण्टर पर पहुँची। उन्होंने उसे बिल थमा दिया। कुल बिल 11145 रु. था। उसमें से 10000 रू. का अग्रिम भुगतान हो चुका था। शेष 1145 रु. थ। वह आश्चर्यचकित रह गई। जहाँ 1-1.5 लाख की बात सोच कर हम डर रहे थे। वहाँ मात्र हजारों में बिल। हालेलुयाह! परमेश्वर की स्तुति हो।

''अभी भुगतान कर रहीं हैं, क्या?'' काउण्टर पर बैठी क्लर्क ने पूछा।

जेस्सी ने बैग से पैसे निकाल कर देखे....। 1135 रूपयें....। 10 रू. की कमी है। तभी भाई जेम्स 5000 रु. लेकर आये। ''जेम्स, 10 की कमी है।'' उसने कहा।

''लेकिन मेरे पास तो 5 ही है।'' जेम्स का चेहरा अजीब सा हो गया। दस को उसने दस हजार समझ लिया था।

''नहीं जेम्स, बस दस रुपये मात्र, तुम्हारे पास है क्या?''

''डिस्चार्ज हो गया है,....। भुगतान भी हो गया है।''

''कैसे'' ?

''बस, ऐसे ही।''

''हँ....।''

''हाँ....।''

एक घंटे बाद सनी कार लेकर पहुँच गये। शाम को पास ही साबू के घर में खाना था। साबू की पत्नी ने प्रस्ताव रखा....। मृत्यु से सामना हो कर भी बच निकलने का वह अद्वितीय अनुभव.....। उसे शब्दों में उकेरना चाहिए....।

मैंने मन में नोट किया। अगर मैंने कभी अपने अनुभव को लिखा

तो उस पुस्तक को क्या शीर्षक दूँगा....। Death, The Valley of Death and the Shadow of the Almighty मृत्यु, मृत्यु की घाटी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण।

बाद के कुछ दिन मैं कोट्टयम में रहा। हेपेटैटिस के साथी के रूप में मुझे अर्थराइटिस की बीमारी भी मिल गई थी। दर्द निवारक दवाइयाँ भी बेअसर थीं।

घर के सब लोग प्रार्थना में गये थे। एकांत मिलने पर मैंने प्रभु से पूछा, ''मेरे लिए क्या संदेश है?'' कोई आवाज नहीं आई। प्रभु की परीक्षा के वृत्तांत पर ध्यान अटका गया ।

दोष लगाने वाले शैतान ने यीशु से प्रश्न किया, ''क्या तू यह सोचता है कि तू ईश-पुत्र है? क्या तुझे निश्चय है''

''तेरे पुत्रत्व की निश्चयता क्या है ? पुत्र है तो फिर भूख कैसी? जो भूखा हो वह ईश्वर-पुत्र कैसे हो सकता है? क्या तू इस पत्थर को रोटी नही बना सकता? यदि ऐसा कर सका तो निश्चय है कि तू ईश्वर-पुत्र है।''

मैंने कहा, ''पुत्रत्व के निश्चय के लिये मुझे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। उसके मुख के वचन ऐसा ही कहते हैं।'' दोष लगाने वाला निरूत्तर हो गया।

मैंने उसके वचनों के लिए कान लगाया। उसका वचन मधु के सामान मीठा था। पेट में वह जीवन दायक बना। तभी चेले उसके पास आये। प्रभु तुझे भूख लगी होगी? हम तेरे लिए भोजन लाए हैं। परंतु वह उन्हें तरस के साथ देखने लगा। वह उनसे उस भोजन के विषय में बातें करने लगा जिसने उसे तृप्त किया था। उसकी बातें उनके लिये पहेली सी जान पड़ी।

बिस्तर पर लेटे लेटे ही मैं चेलों के संग हो लिया। प्रभु के वचनों ने मुझे आनंद से भर दिया। उसकी इच्छा मेरे लिए अद्‌भुत थी। उसके वचन मेरे लिए जीवन है,.....पुत्रत्व की निश्चयता है। उसकी इच्छा को पूरा करना ही मेरा आहार है।

मैं अब भी पूर्ण स्वस्थ नहीं हुआ था। फिर भी आराधनाओं में भाग लेने की अभिलाषा मुझे संगति में ले जाती। कई बार कदम बढ़ाना भी दूभर होता। चिकित्सकों ने पूर्ण आराम की सलाह दी थी। मित्रों ने तो यह सलाह दी थी कि एक साल तक मैं यात्रायें न करूँ। तीसरा महीना आते आते मुझे लगने लगा कि मैं स्वस्थ हो गया हूँ। मिशन क्षेत्रों को देखने की इच्छा मन में बलवती होने लगी। मेरा ध्यान वर्षात की आराधनाओं में सुने परमेश्वर के वचनों की ओर गया। मनुष्य परमेश्वर के मुह से निकले हर एक वचन से जीवित रहेगा। मेरे भेजने वाले की इच्छा पूरी करना ही मेरा भोजन है।

''मुझे उत्तर भारत की ओर जाना है।'' मैंने जेस्सी से कहा।

''यदि परमेश्वर ने कहा है तो जरूर जाइये।'' जेस्सी ने मुझे सलाह दी। मुझे निश्चय था कि परमेश्वर यही चाहता है। मैं निरंतर वचन से जीवन पाता रहा।

परमेश्वर असंभव को संभव करने वाला है। इस्राएल देश का पुनः स्थापित होना इसका सबसे महान उदाहरण है। कोई यह स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि इस्राएल का पुनः उदय होगा । इस्राएल के प्रवासी और अप्रवासियों में कोई भी ऐसा नहीं था जो एक दीवार भी बना सके। (नह. 4:12)। परंतु यदि परमेश्वर चाहेगा तो कौन उसे रोक सकता है? चारों ओर के राष्ट्रों को आश्चर्य में डालते हुए परमेश्वर ने इस्राएल देश को पुनः स्थापित किया।

परमेश्वर की पुर्नस्थापना अपने आप में अनोखी है। वह सबसे उत्कृष्ट होती है। सबकी उम्मीदों और धारणाओं से परे वह अपने कार्य को अंजाम देता है। मेरा स्वस्थ होना एक स्वप्न के समान ही था- मैं दमोह पहुँच कर सेवा क्षेत्रों का दौरा करने लगा। तीन-चार घंटे लगातार गाड़ी चलाता रहा। परमेश्वर की पुनः स्थापना की महिमा को मैंने अनुभव से जाना।

हमारे अधरों पर मुस्कान थी (भजन 126:2)। कुछ महीनों बाद पुनः दमोह पहुँचने पर एक दिन जीप में डीजल नही था। हमारे पास पैसा भी नहीं था। करीब 10 कि.मी. दूर एक गांव में जरूरी काम से जाना

था। मैंने जेम्स से कहा, ''साइकिल निकालो।'' उसके मना करने के बावजूद हम साइकिल पर सवार हो गये। 20 कि.मी. की यात्रा के बाद वापस आने पर मैं हांफ रहा था पर चेहरे पर प्रसन्नता थी क्योंकि यह स्वास्थ्य तो परमेश्वर ने दिया था।

समय हमें विभिन्न अनुभव देता है....। समय ही उन्हें मिटा भी देता है। मृत्यु और मुत्यु की घाटी से गुजरना एक तीक्ष्ण अनुभव था। वह तो मिट गया....। केवल उसके वचन, उसकी इच्छा और उसके कार्य स्थिर हैं। सर्वशक्तिमान की शरण.....। वह तो बहुत ही अनोखा अनुभव था। वह अब भी बाकी है। यही कामना है कि यह अनुभव सदा यूँ ही रहे।

प्रिय भाई/बहिन,

इस पुस्तक को पढ़ने के लिए आपने अपना बहुमूल्य समय खर्च किया है। यद्यपि इस पुस्तक में मैंने अपनी चंगाई के बारे में बताया है । फिर भी मैने यह बताने का प्रयास किया है कि इस कठिन समय में मैंने किस प्रकार अपने तारणहार को अपने बेहद करीब पाया।

मैंने क्यों इस अनुभव को आपके साथ बांटा? मैं यह कहना चाहता हूँ कि ऐसा अनुभव आपका भी हो सकता है जब परमेश्वर को आप भी अपने बिल्कुल करीब पाएं। परमेश्वर को आप अपने जीवन का यथार्थ बना सकते हैं।

''जो मृत्यु से नहीं डरता है वह किसी और बात से नहीं डरता।'' परमेश्वर का यह वचन कितना अर्थपूर्ण है। मृत्यु का भय हटाने के लिए किसी भी व्यक्ति को मृत्यु के पार के जीवन के विषय में निश्चय होना चाहिए। यीशु के साथ मेरी मित्रता के कारण ही मैं मृत्यु के पार के अनंत जीवन का अधिकारी था। इस दृढ़ विश्वास ने मेरे मृत्यु के भय को कम कर दिया कि मुझे कोई भी यीशु से अलग नहीं कर सकता।

यदि यीशु के साथ आपकी मित्रता हो चुकी है तो मैं आपके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। ऐसी स्थिति में आप मुस्कुराते हुए मृत्यु का सामना कर सकेंगें। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि आप बहुत जल्दी मर जाएंगें परन्तु यह कि मसीह के विश्वासी होने के नाते आप जीवन और मृत्यु दोनों का सामना तुल्य रूप से कर सकेंगें।

यदि अभी भी आप मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में अनिश्चय की स्थिति में हैं तो मैं बड़ी विनम्रता के साथ आपको सलाह दूंगा कि समय रहते आप यीशु के साथ मित्रता कर लें। यदि आप उद्धार प्राप्त व्यक्ति होने के बावजूद परमेश्वर को करीब से नहीं जानते हैं तो मेरी विनती है कि आप मसीह के साथ मित्रता में आगे बढें।

प्रिय मित्र, मैं दृढ़ता के साथ कहता हूँ। जो यीशु को करीब से जानते हैं उन्हें किसी भी बात से भय नही लगता है। वह परमेश्वर के हृदय की धड़कन को महसूस करता है। जीवन और मृत्यु की दशा में वह मसीह की हथेली में सुरक्षित है। एक गहरी मित्रता के लिए क्यों न आप यीशु से अभी विनती करें?

मेरे साथ कहें :

''यीशु, मैं आप की सनातन मित्रता चाहता हूं। जीवन और मृत्यु की दशा में मैं आप को मित्र के रूप में पाना चाहता हूं। मैं जीना चाहता हूँ, आपको देखते हुए....,आपको सुनते हुए...। मैं जीना चाहता हूँ, आपको स्पर्श करते हुए....। मैं आपको अधिक गहराई के साथ जानना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना ग्रहण करें।

आमीन!''